उर्दू दैनिक तामीर के २५ वे साल में क़दम रखने पर एक और पेशकश

दैनिक भारत कि

तामीर

संपादक – काझी मकदूम शफीउद्दीन hinditameer@gmail.com

बीड (महाराष्ट्र) वर्ष - 1 ला अंक - १५६ वा रविवार ५ जनवरी २०२५ RNI TITLE CODE : MAHHIN11405/120/1/3/2024 किमत २ रुपये पन्ने - ४

आखिरकार सुदर्शन घुले, सुधीर सांगळे गिरफ्तार

संतोष देशमुख हत्याकांड : आरोपियों को 14 दिन की पुलिस हिरासत

बीड : मस्साजोग (जिला बीड) के सरपंच संतोष देशमुख की हत्या के मामले में बड़ी कार्रवाई हुई है। इस हत्याकांड के संदिग्ध शूटर सुदर्शन घुले और सुधीर सांगळे को सीआईडी की टीम ने गिरफ्तार कर लिया है। सीआईडी अधिकारियों ने गहन जांच के बाद इन आरोपियों को पकड़कर बीड पुलिस के हवाले किया।

फिलहाल इन दोनों आरोपियों को केज पुलिस स्टेशन ले जाया गया, जहां उन्हें 14 दिन की पुलिस हिरासत दी गई है। आगे इनसे विस्तृत पूछताछ की जाएगी। इस मामले से इलाके में सनसनी फैल गई है, और सरपंच संतोष देशमुख की हत्या के मुख्य साजिशकर्ता और अन्य संभावित आरोपियों की तलाश के लिए पुलिस तेजी से जांच में जुटी हुई है।

सीआईडी ने पकड़े संदिग्ध हत्यारे

बीड के केज तहसील के मस्साजोग गांव के सरपंच संतोष देशमुख हत्या मामले में दो आरोपियों को सीआईडी की टीम ने गिरफ्तार किया है। इन आरोपियों को नेकनूर पुलिस स्टेशन में पेश किया गया है। बीड जिले में हुए इस हत्याकांड से पूरे राज्य में हलचल मच

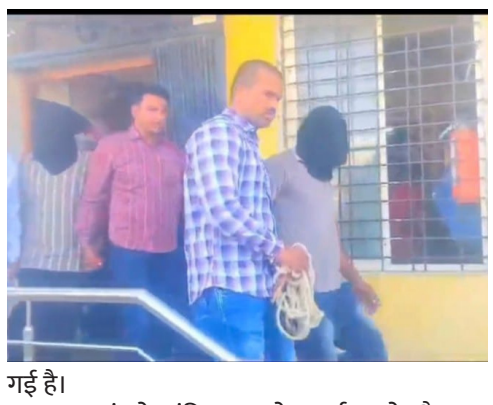

गई है।

इस हत्याकांड के संदिग्ध हत्यारे सुदर्शन घुले और सुधीर सांगळे को सीआईडी ने गिरफ्तार कर लिया है। दोनों आरोपियों को हिरासत में लेकर क्राइम इन्वेस्टिगेशन डिपार्टमेंट के पुलिस उपाधीक्षक अनिल गुजर के सुपुर्द किया गया है। संतोष देशमुख हत्याकांड में केज पुलिस स्टेशन में अपराध क्रमांक 637/2024 के तहत भारतीय दंड संहिता की धारा 103(2), 140(1), 126, 118(1), 34(4), 324(4)(5), 189(2), 190 के तहत गंभीर मामला दर्ज किया गया है।

गिरफ्तार आरोपी सिर्फ मोहरे, असली मास्टरमाइंड अभी भी फरार

संतोष देशमुख हत्याकांड में सीआईडी ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है, लेकिन ये दोनों आरोपी केवल मोहरे हैं, असली मास्टरमाइंड अब भी फरार है। मैंने पहले ही कहा था - बकरे की अम्मा कब तक दुआ मांगेगी। आज दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है, और विशेष टीम ने उन्हें पकड़ा है, यह सराहनीय है। संतोष देशमुख हत्या मामले की चल रही जांच से हम संतुष्ट हैं," ऐसा विधायक सुरेश धस ने कहा।

धनंजय मुंडे को इस्तीफा देना चाहिए - संदीप क्षीरसागर

इस मामले के मास्टरमाइंड वाल्मिक कराड वर्तमान में बीड के शहर पुलिस स्टेशन में बंद हैं। यह सभी को पता है कि इस पूरे प्रकरण के पीछे कौन है और किसका समर्थन प्राप्त है। इसलिए धनंजय मुंडे को तत्काल इस्तीफा देना चाहिए। जब यह पूरा मामला सुलझ जाएगा, तब वह जो भी पद लेना चाहें, ले सकते हैं," ऐसा बयान संदीप क्षीरसागर ने दिया।

"चड्डी उतार दुंगा"

खासदार को पुलिस अधिकारी मुंडे की धमकी

बीड़ (तामीर न्यूज) : विवादित सहायक पुलिस निरीक्षक गणेश मुंडे ने 'बीड़ पुलिस प्रेस ग्रुप' में शनिवार शाम एक पोस्ट की, जिससे पुलिस दल में हलचल मच गई। उन्होंने लिखा, 'इस खासदार की चड्डी भी जगह पर नहीं रहेगी, अगर मैंने प्रेस कान्फ्रेंस लि।

इस पोस्ट से साफ है कि मुंडे का निशाना किस पर है। इस तरह की धमकी भरी भाषा का इस्तेमाल पुलिस अधिकारी कर रहे हैं, इसे लेकर चर्चा शुरू हो गई है।

सरपंच संतोश देशमुख की हत्या का मामला

बीड़ जिले के मसाजोग में 9 दिसंबर को सरपंच संतोश देशमुख की निर्मम हत्या कर दी गई थी। इस घटना के बाद महाराष्ट्र में काफी आक्रोश देखने को मिला। अब इस हत्या की जांच सीआईडी, एसआईटी और न्यायालयीन प्रक्रिया के तहत जारी है। इस हत्याकांड के पीछे जो भी राजनीतिक लोग शामिल हैं, उनके खिलाफ जनता में जबरदस्त आक्रोश है।

खासदारों ने की सख्त कार्रवाई की मांग

इस मामले में बीड़ के खासदार बजरंग सोनवणे, सुरेश धस, संदीप क्षीरसागर और प्रकाश सोळंके ने सभी आरोपियों के खिलाफ कड़ी सजा की मांग की है।

इसी बीच, खासदार बजरंग सोनवणे ने मानवाधिकार आयोग में शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने बीड़ के सहायक पुलिस निरीक्षक गणेश मुंडे और सपोनी. दहिफळे के कॉल रिकॉर्ड की जांच करने की मांग की है।

सांसद सोनवणे की मांग के बाद बीड़ पुलिस में हलचल मच गई है। दहिफले और मुंडे, इन दोनों के बारे में आम लोगों के साथ-साथ पुलिस विभाग में भी ज्यादा अच्छा नहीं कहा जाता। इसमें ही एसपीओ गणेश मुंडे, जो एसपी के अधीन काम कर रहे थे, उन्होंने बीड़ पुलिस प्रेस नामक व्हाट्सएप ग्रुप पर शनिवार शाम को एक पोस्ट की थी। उसमें उन्होंने लिखा था, "इस सांसद की चड्डी तक इस जगह पर नहीं टिकेगी, अगर मैंने प्रेस कॉन्फ्रेंस लि तो । इस पोस्ट को लेकर कुछ पत्रकारों ने जब उनसे सवाल किए तो मुंडे ने तुरंत पोस्ट डिलीट कर दी। इसके बाद, स्थानिक पुलिस निरीक्षक (पो.नि.) उस्मान शेख ने मुंडे को वाहटस अप गुरुप पुलिस मुख्यालय से हटा दिया। एसपीओ मुंडे ने एक तरह से सांसद सोनवणे को ही धमकी दी है, ऐसा कहा जा रहा है। अब इस मुद्दे पर सांसद सोनवणे क्या रुख अपनाते हैं और इस तरह की विवादित और धमकी भरी भाषा का इस्तेमाल करने वाले पुलिस अधिकारी पर एसपी क्या कार्रवाई करते हैं, इस पर सबकी नजरें टिकी हुई हैं।

नियोजन प्राधिकरणों को सशक्त करें: मुख्यमंत्री फडणवीस

मुंबई: राज्य में विभिन्न नियोजन प्राधिकरणों को सशक्त बनाकर उनका संचालन कंपनी की तर्ज पर किया जाए, ऐसे निर्देश मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने आज अधिकारियों को दिए।

मुख्यमंत्री ने ये निर्देश नगर विकास विभाग के आगामी 100 दिनों के कार्य योजना की समीक्षा बैठक के दौरान दिए।

सह्याद्री राज्य अतिथिगृह में आयोजित इस बैठक में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, कौशल विकास मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा, महिला एवं बाल विकास मंत्री अदिति तटकरे, राज्य मंत्री माधुरी मिसाल और राज्य मंत्री पंकज भोयर उपस्थित थे।

नगर विकास विभाग (एक) के अपर मुख्य सचिव असीम कुमार गुप्ता ने विभाग की प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि विभाग के तहत आने वाले विभिन्न नियोजन प्राधिकरणों का सशक्तिकरण, शहरों के निकट करीब 3,500 गांवों में सड़क विकास की योजना, राज्य के 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहरों में शहरी योजना परियोजनाओं का कार्यान्वयन, भवन निर्माण परमिट प्रक्रिया का कंप्यूटरीकरण, और पर्यटन नीति के तहत संयुक्त शहरी विकास एवं नियंत्रण नियमों में बदलाव से संबंधित जानकारी दी। इस दौरान सोलापुर स्मार्ट सिटी योजना के लिए जल आपूर्ति परियोजना में धन की कमी का प्रस्ताव रखा गया। इस पर मुख्यमंत्री ने इस प्रस्ताव को मंजूरी देने के निर्देश दिए, ताकि सोलापुर के नागरिकों के जल संकट का समाधान हो सके। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि राज्य के शहरों के विकास के लिए निधि खर्च करना आवश्यक है। शहरी आधारभूत ढांचे के विकास के लिए पूंजीगत निवेश (कैपिटल इन्वेस्टमेंट) करना जरूरी है, लेकिन इसके लिए वित्तीय संसाधन जुटाने हेतु नवीन आर्थिक विकल्प विकसित करने चाहिए, ऐसा उन्होंने निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि राज्य के हर शहर में सिनेमाघरों की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए मौजूदा सिंगल स्क्रीन थिएटर को कुछ रियायतें दी जा सकती हैं या नहीं, इसकी जांच की जानी चाहिए।

अलखैर नागरी सहकारी संस्था के उर्दू और मराठी कैलेंडर का मान्यवरों के हाथों विमोचन संपन्न

अंबाजोगाई : अंबाजोगाई तहसील के कार्यक्षेत्र में सक्रिय अलखैर नागरी सहकारी संस्था ने हमेशा समाज के विभिन्न वर्गों को साथ लेकर उनके सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए कार्य किया है। हर साल, अलखैर सहकारी संस्था की ओर से विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम और जागरूकता अभियान आयोजित किए जाते हैं। इसी के तहत, हर साल 31 दिसंबर को संस्था द्वारा उर्दू कैलेंडर का विमोचन किया जाता है।

लेकिन इस बार, अलखैर सहकारी संस्था ने उर्दू के साथ-साथ मराठी कैलेंडर भी प्रकाशित करके सभी जाति और धर्मों को एक साथ जोड़ने का प्रयास किया। इस कैलेंडर का विमोचन अलखैर सहकारी संस्था के मुख्यालय में मान्यवरों के हाथों संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के मार्गदर्शक शेख अब्दुल रहीम ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में जनसेवा हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. लतीफ खान सहित अन्य मान्यवर उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में, अलखैर सहकारी संस्था के

उपाध्यक्ष मुज्जमील खतीब के सुपुत्र तज्जमुल खतीब को केंद्र सरकार के औद्योगिक अनुसंधान संस्थान में ASO पद पर चयन होने के उपलक्ष्य में सम्मानित किया गया। इसके बाद, मान्यवरों के हाथों उर्दू और मराठी कैलेंडर का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. लतीफ खान ने कहा: सामाजिक दृष्टि से यह मायने नहीं रखता कि हमारे पास कितनी संपत्ति है या हम कितने अमीर हैं। बल्कि यह देखा जाता है कि हम कितने दरियादिल, दानशील हैं और समाज के लिए कितना कार्य करते हैं। लेकिन, अक्सर लोगों का स्वार्थ आड़े आ जाता है, जिससे सामाजिक कार्यों की उपेक्षा होती है।"

उन्होंने आगे कहा: अलखैर नागरी सहकारी संस्था ने हमेशा समाज के हित में कार्य किया है। इसने न केवल समाजोपयोगी योजनाएँ चलाईं, बल्कि आर्थिक रूप से कमजोर और जरूरतमंद परिवारों को आत्मनिर्भर बनाने का कार्य भी किया है। यह संस्था कभी भी जाति, धर्म या संप्रदाय के आधार पर भेदभाव नहीं करती, बल्कि हर जरूरतमंद को मदद और सहयोग प्रदान करती है। यह सहकारी संस्था अंबाजोगाई तहसील के आर्थिक क्षेत्र में एक आदर्श (Ideal) संस्था है। ऐसी संस्थाएँ सामाजिक कार्यों में अपनी अलग पहचान बनाती हैं।"

इस कार्यक्रम में शेख शाकेरभाई, मुश्ताक नदवी, जाफरसेठ, संस्था के चेयरमैन शेख उमर फारूक, उपाध्यक्ष मुज्जमील खतीब, सचिव शेख तालेब चाउस,

अन्न और नागरिक आपूर्ति मंत्री धनंजय मुंडे एक्शन मोड में

दिसंबर माह में राशन से वंचित रहे कार्डधारकों की स्थिति की समीक्षा

परळी वैजनाथ : महाराष्ट्र के अन्न, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता संरक्षण मंत्री धनंजय मुंडे आज एक्शन मोड में नजर आए। उन्होंने दिसंबर महीने के राशन वितरण की समीक्षा बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग (VC) के माध्यम से आयोजित की।

राज्य में दिसंबर में 92.09% राशन वितरण पूरा किया गया, लेकिन शेष वितरण में आ रही समस्याओं पर चर्चा करने के लिए धनंजय मुंडे ने पूरे राज्य के आपूर्ति विभाग की बैठक ली।

इस बैठक में उन्होंने ई-पॉस मशीन की समस्याएं, पोर्टल का सर्वर डाउन होने की दिक्कतें, और अन्य तकनीकी बाधाओं को लेकर जिलेवार वास्तविक आंकड़ों की समीक्षा की।

ठाणे जिले में सबसे अधिक 98.59% जबकि धुले जिले में सबसे कम 81.69% राशन वितरण हुआ है।

राशन वितरण को 100% तक पहुंचाने के लिए ऑनलाइन और तकनीकी समस्याओं को दूर करने के निर्देश दिए गए।

अगले हफ्ते इस मुद्दे पर फिर से एक बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

जिन जिलों में तकनीकी कारणों से लाभार्थियों को दिसंबर में राशन नहीं मिला, वहां जनवरी में विशेष अवधि बढ़ाने के प्रस्ताव तुरंत भेजने के निर्देश दिए गए।

नागपुर डिवीजन में आपूर्ति निरीक्षकों और अन्य रिक्त पदों को भरने का प्रस्ताव मांगा गया।

FCI (भारतीय खाद्य निगम) के विभिन्न अनुबंधों और लंबित मांगों को लेकर अगले हफ्ते के भीतर निर्णय लिया जाएगा। जिन जिलों में राशन भंडारण के लिए रैक (Rack) उतारे जाते हैं, वहां की सड़कों और अन्य बुनियादी सुविधाओं की समीक्षा की जाएगी। ई-पॉस मशीनों पर डेटा उपलब्ध कराना, सर्वर डाउन की समस्या हल करना और सभी तकनीकी परेशानियों को जल्द से जल्द दूर करने के लिए विशेष निर्देश दिए गए। इस बैठक में अन्न व नागरिक आपूर्ति विभाग के सहसचिव, उपसचिव, राशन वितरण निदेशालय के नियंत्रक, आपूर्ति विभाग के सभी उपयुक्त अधिकारी, राज्य के सभी जिलों के जिला आपूर्ति अधिकारी और उपनियंत्रक उपस्थित थे।

डॉ. हनुमंत सौदागर 'मराठवाड़ा भूषण आदर्श शिक्षक' पुरस्कार से सम्मानित

केज : तालुका के आनंदगांव के निवासी डॉ. हनुमंत सौदागर को मराठवाड़ा भूषण आदर्श शिक्षक पुरस्कार से तुळजापुर में प्रतिष्ठित हस्तियों के हाथों सम्मानित किया गया। इस उपलब्धि के लिए उन्हें हर तरफ से बधाइयाँ दी जा रही हैं।

महाविद्यालयीन शैक्षणिक उपक्रम, पर्यावरण संरक्षण, जल साक्षरता, स्वच्छता अभियान और वंचित विद्यार्थियों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करने जैसे कई सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

जिला परिषद धाराशिव (उस्मानाबाद) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गायकवाड, इतिहासकार डॉ. श्रीमंत कोकाटे, तुळजापुर पंचायत समिति के गटविकास अधिकारी अमोल ताकभाते, संयोजन समिति के राजकुमार धुरगुडे और महेंद्र धुरगुडे इन सभी विशिष्ट अतिथियों के हाथों उन्हें यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया।

स्वतंत्रता सेनानी भानुदासराव धुरगुडे की जयंती के अवसर पर मराठवाड़ा समन्वय समिति, पुणे की ओर से शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है। इसी श्रृंखला में इस वर्ष का प्रतिष्ठित 'मराठवाड़ा भूषण आदर्श शिक्षक पुरस्कार' तुळजापुर में भव्य समारोह के दौरान डॉ. हनुमंत सौदागर को प्रदान किया गया।

विजय के कातिल कौन?

मैं अपने नरीमन प्वाइंट मुंबई कार्यालय से बाहर निकला। स्टेट्स होटल में बारामती के अध्यापक लक्ष्मण जगताप मुझसे मिलने के लिए मेरी राह देख रहे थे। जब मैं कुर्सी में बैठा तब उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा " भाई रविवार का लेख फिर से शुरू कीजिए। जब से लेख बंद हुआ है तब से जीलन में कुछ अधूरा सा लगता है। एक क्षण का विलंब ना करते हुए मैंने कहा " 5 जनवरी से 150 अखबार में मै भ्रमंती लिख रहा हूं। वह भी मराठी, हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, गुजराती भाषिक पेपर में प्रकाशित होने वाली है। अचानक उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ से छोड़ते हुए उन्होंने अपनी दोनों भौंहें उचकाई। जगताप सर से मेरी बातें हो ही रही थी कि, पुणे से राधिका भाभी का फोन आया भाभी फोन पर जोर जोर से रो रही थी। भैया विजय हमें छोड़कर चले गए,यह कहते हुए उन्होंने फोन रख दिया। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। सामने रखा पानी का गिलास उठकर मैंने थोड़ा पानी पिया। उसके बाद मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। जो घटित हुआ वह मैंने जगताप सर को बता दिया। उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया। एक क्षण की भी देरी ना करते हुए मैं पुणे की ओर निकल पड़ा।

परभणी के विजय निकम और मेरी दोस्ती नांदेड़ के प्रतिभा निकेतन महाविद्यालय से ही थी। बाद में संभाजी नगर में भी हम दोनों उच्च शिक्षा के लिए एक साथ ही थे। एक अभियांत्रिकी महाविद्यालय में विजय प्राध्यापक के रूप में नौकरी करने लगा। तब से विजय पुणे में ही रहने लगा। मैं जब भी मुंबई से पुणे जाता तब विजय से मिलने उसके घर जरूर जाता था। नियमित रूप से हमारी मुलाकात होती रहती थी। सब ठीक-ठाक चल रहा था और फिर अचानक ऐसी खबर सुनकर मुझे तो सदमा ही लगा। विजय के साथ बिताए सारे पल क्षण भर में मेरी आंखों के सामने आ गए। विजय के जाने से मुझे भी बहुत बड़ा सदमा लगा। मेरी आंखों से आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। जब विजय के घर पहुंचा तब मुझे देखकर भाभी फुट-फुट कर रोने लगी। मैं खुद को संभालते हुए बाहर निकाल आया। विजय के घर संपर्क किया। अपने आप को संभालते हुए अब खुद ही विजय को उसके गांव ले जाने के लिए मैने एंबुलेंस को फोन किया। पुणे में स्थित विजय के सारे रिश्तेदार दोस्त बहुत ही व्यस्त थे। मानो विश्व का सारा भार उन्हीं पर हो। राधिका भाभी के चचेरे भाई ने कहा " डेड बॉडी के साथ बैठने में मुझे डर लगता है।" अब उसे क्या कहूं ! मेरी समझ में नहीं आया। हम पुणे से निकल गए। विजय का लड़का श्रीकांत 11 साल का। लड़की श्रीजया 4 साल की। लड़की मेरे पास बैठी थी। लड़का एक हाथ से डेड बॉडी को सहारा देते हुए राधिका भाभी को संभाल रहा था। पुणे से निकलने के एक डेढ़ घंटे बाद भाभी ने अपने आप को संभाला। रो-रो कर उनकी आंखों के आंसू खत्म हो चुके थे। भाभी की नजरों से नजर मिलाने की हिम्मत मुझ में नहीं थी। उस एंबुलेंस में दिल को दहलाने वाला दृश्य भी मैं अपनी आंखों से देख रहा था। विजय की लड़की बार-बार मुझसे कह रही थी " पिताजी को उठाने ना चाचा, मुझे उनसे बात करनी है। मेरे पिताजी ऐसे क्यों सोए हैं? वह मुझसे बात क्यों नहीं करते?" वह छोटी सी लड़की आकुलित स्वर में मुझसे बिनती कर रही थी और मैं उसके एक-एक शब्द को अनसुना कर रहा था। मेरे हृदय की अवस्था दयनीय हो चुकी थी। विजय इस जहां से क्यों निकल गया? उसकी क्या मजबूरी थी?ऐसी क्या परेशानी थी? इसका कारण मुझे भी पता था और भाभी को भी। पिछले आठ महीने से विजय का परिवार बहुत ही कठिन दौर से गुजर रहा था। इन सारी परिस्थितियों को संभालने के लिए खुद को मजबूत बनाना आवश्यक था। जो विजय दुर्भाग्यवश नहीं कर पाया। और इन्हीं सारी विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए विजय हृदय विकार का शिकार हुआ। हृदय विकार यह तो केवल एक कारण था वास्तविकता कुछ और ही था।

यह विषय साढ़े चार साल पुराना है। विजय नागपुर में एक अच्छे महाविद्यालय में नौकरी कर रहा था। विजय की मां को कैंसर हुआ था। मां को इलाज के लिए बार-बार पुणे के अस्पताल में ले जाना पड़ता था। इसी कारण विजय ने मुझे फोन किया और पूछा "मैं नागपुर छोड़कर पुणे में आना चाहता हूं, क्या मुझे पुणे में किसी इंजीनियरिंग महाविद्यालय में नौकरी मिल सकती है?" फिर हम दोनों के प्रयास से एक महाविद्यालय में विजय को प्राध्यापक की नौकरी मिल गई। पुणे जैसे शहर में रहकर मां की सेवा करते हुए एक अच्छे महाविद्यालय में नौकरी करने का सौभाग्य मिलना यह दोनों बातें विजय को खुश कर रही थी। इसी कारण विजय की जिंदगी खुशी से चल रही थी किंतु वह जिस महाविद्यालय में काम कर रहा था वहां काम करते-करते विजय को सारी बातें समझ में आने लगी। कॉलेज की अवस्था नाम बड़े और दर्शन खोटे इस प्रकार की है, यह अब विजय कि समझ में आ चुका था। महाविद्यालय में उसे अब चार-पांच महीना के बाद वेतन मिलता था और वह भी एक महीने का। विजय के पास आमदनी का दूसरा कोई साधन नहीं था। महाविद्यालय में काम का बोझ इतना था कि वहां से समय निकालकर कहीं और काम करके चार पैसे कमाने का मौका भी उसे नहीं मिला। दूसरी जगह काम करने के मौके भी विजय को मिले किंतु चार-चार महीने का वेतन उस महाविद्यालय के पास पड़ा हुआ था, वह छोड़कर जाना भी विजय को उचित नहीं लगा। अगर महाविद्यालय छोड़कर कहीं और जाते हैं तो पिछले महीनों के वेतन से हाथ धोना पड़ता। इस प्रकार की अनेक बातों की जानकारी अब विजय को हो चुकी थी। भाभी ने कहा "पिछले आठ महीना से इनका वेतन नहीं हुआ है। बच्चों की पढ़ाई, घर परिवार के लिए लगने वाला खर्च कहां से करेंगे? इसीलिए वे तनाव में जी रहे थे।" इन सारी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए मैंने उस महाविद्यालय से संबंधित कुछ लोगों से बात की। पिछले दो महीनों से विजय बहुत परेशान रहता था। बीपी, शुगर, थायराइड जैसी बीमारियों ने अब विजय को घेर लिया था। यह भी मुझे भाभी ने बताया। यह सवाल केवल अकेले विजय का नहीं है बल्कि उस महाविद्यालय से संबंधित हजारों लोगों का है। उस महाविद्यालय में छात्रों से प्रवेश के नाम पर मोटी रकम वसूली जाती है। विभिन्न प्रकार की मदद भी उन्हें मिलती है। शासकीय मदद भी महाविद्यालय को मिलती है। उस महाविद्यालय को राजकीय संरक्षण भी प्राप्त है। फिर भी प्राध्यापकों का वेतन हर महीने क्यों नहीं किया जाता? वेतन नियमित रखने में संस्था चालक को क्या परेशानी है? कोई परेशानी नहीं थी, फिर भी वहां वेतन नियमित रूप से क्यों नहीं होता था? इसका जवाब किसी के पास नहीं था। आठ दिन पहले ही चर्चा करते समय विजय ने मुझे कहा था कि "इस राज्य में ढाई हजार ऐसी संस्थाएं है जिन संस्थाओं में काम करने वाले साढे चार लाख से भी अधिक शिक्षित व्यक्ति जिन्हें उनके काम का मुआवजा समय पर नहीं मिलता। अनेक जगह पर यही वेतन डुबाया जाता है। इस राज्य का यही वास्तविक सत्य रूप है।

हम विजय के घर पहुंचे। पूरा मोहल्ला विजय के लिए रुका था। हमारी गाड़ी रुकते ही विजय के अनेक रिश्तेदार फूट-फूट कर रो रहे थे। विजय की मां का देहांत पिछले वर्ष ही हो चुका था। तीन बहने, एक भाई, चाचा, फूफ़ा सभी मेरी ओर देख रहे थे। उन सभी की नजरे मानो मुझसे कुछ कह रही थी। अगर मैंनै तय किया होता तो इस समस्या से जरूर कोई रास्ता निकलता। किसी को भी समझाने की हिम्मत मुझ में नहीं थी। विजय के चाचा श्रीकांत को बाहर ले गए। फिर श्रीकांत के बाल निकाले गए। उसकी पीठ पर कंबल ओढ़ दिया गया। श्रीकांत हाथ में तिरडी लेकर नंगे पैर जनाजे के सामने रास्ते पर चल रहा था। बहुत देर होने के कारण विजय की डेड बॉडी से दुर्गंध आ रही थी। यही दुर्गंध इस राज्य के अनेक संस्था चालकों की लालची शोषण वृत्ति से भी आ रही है। यह सारा दृश्य देखते हुए ऐसे विचार मेरे मन में आ रहे थे। मैं सोच रहा था, आखिर विजय का हत्यारा कौन है?विजय के पूरे परिवार को रास्ते पर लाने के लिए जिम्मेदार कौन है?विजय के छोटे से मासूम बच्चों को अनाथ करने वाला कौन है? जिसने अपने बेटे को अपनी गोद में लेकर बड़ा किया आज उसी गोद में विजय का मृत शरीर पड़ा था। यह सारे सवाल केवल अकेले विजय को लेकर नहीं थे। यह सवाल इस राज्य के असंख्य उच्च शिक्षित लोगों का है। जो चुपचाप शोषण को सहन करते हैं। उन सभी शोषितों को यह मालूम ही नहीं है कि, बड़े पैमाने पर हो रहे इस शोषण के लिए संस्था चालकों को बहुत बड़ा राजाश्रय भी हासिल है। यह सब जानबूझकर किया जा रहा है। इस शोषण के माध्यम से बहुत बड़ा अर्थ कारण हो रहा है। उसी अर्थ कारण के माध्यम से संस्था चालक और राजनेताओं के घरों से सोने का धुआँ निकल रहा है। बहुत सारे सवाल है और उतने ही हैरान करने वाले जवाब भी है। दूसरे दिन हम सभी विजय की अस्थियां इकट्ठा करने के लिए कब्रिस्तान में गए। जब उस राख में अस्थियां ना के बराबर थी तब ऐसा लगा मानो संस्था चालकों ने इतना शोषण किया की विजय की हड्डियां भी बाकी नहीं रखी। आप समझ सकते हैं कि शोषण की गहराई कितनी होगी। दो दिन विजय के घर रहकर फिर परभणी से मुंबई के लिए निकला। इसी दो दिन में विजय के समान अनेक लोगों की कहानियों का अध्ययन भी मैंने किया। अनेक लोगों से बात की। मुझे लगता था मैं सब कुछ जानता हूं किंतु यह विषय इतना भी सामान्य नहीं था। इस शोषण की जड़े बहुत दूर तक जाती है। जिनके पास बहुत कुछ है वहां भी शोषण होता है। जिनके पास जीने लायक ही साधन है उनका भी शोषण होता है। ऐसी दर्दनाक स्थिति में फंसे हुए उच्च शिक्षित वर्ग को मदद करने के लिए, उनके परिवार का मसीहा बनने के लिए कोई आगे आएगा या नहीं? यह सवाल मेरे मन को आहत कर रहा था। यही सवाल आपको भी आहत करता होगा है ना...।

Live सफ़र नामा

संदीप काले

sandip98868@gmail.com

9890098868

नवनियुक्त स्कूली शिक्षा मंत्री मा. ना. दादा भुसे साहेब का हैप्पी टू हेल्प फाउंडेशन की ओर से पुष्पगुच्छ की बजाय पुस्तक और शाल देकर सम्मान

शिक्षा सेवक अवधि रद्द करें – शेख अब्दुल रहीम

छत्रपति संभाजीनगर:(औरंगाबाद)

महाराष्ट्र राज्य मंत्रिमंडल का विस्तार हुआ और मालेगांव जिले के नासिक विधानसभा क्षेत्र से मा. ना. दादा भुसे साहेब को राज्य के नए स्कूली शिक्षा मंत्री के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गई। उन्होंने हाल ही में नासिक महानगरपालिका स्कूल में विद्यार्थियों की उपस्थिति में अपना पदभार ग्रहण किया। इसके उपलक्ष्य में हैप्पी टू हेल्प फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष तथा महाराष्ट्र राज्य पुरानी पेंशन हक संगठन के राज्य प्रवक्ता शेख अब्दुल रहीम सर ने 3 जनवरी 2025, शुक्रवार को सुबह 10 बजे मुंबई स्थित उनके निवास पर भेंट की। इस दौरान उन्होंने मंत्री का अभिनंदन किया और विश्वास व्यक्त किया कि विद्यार्थियों व शिक्षकों से जुड़े कई मुद्दे जल्द ही सुलझेंगे।

साथ ही, भविष्य की सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं और विभिन्न मांगों को लेकर एक ज्ञापन सौंपा।

प्रमुख मांगें:

1. शिक्षण सेवक (Education Sevak) की अवधि रद्द की जाए।
2. शिक्षकों को BLO (Booth Level Officer) के कार्यों से मुक्त किया जाए।
3. स्कूलों और शिक्षकों के लिए अनुदान, वेतन और शालाओं को मान्यता देने के संबंध में महायुति सरकार द्वारा विधानसभा चुनाव से पहले कैबिनेट में लिए गए निर्णयों को तत्काल लागू किया जाए।
4. राज्य की कई स्कूलों के विद्यार्थी अभी भी गणवेश (स्कूली यूनिफॉर्म) से वंचित हैं, सभी छात्रों को तुरंत गणवेश वितरित किया जाए।

इस दौरान शिक्षा से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई और ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर मालेगांव-भिवंडी से हैप्पी टू हेल्प फाउंडेशन के सदस्य शारीक मोमिन सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

देशमुख हत्याकांड: सांसद सोनवणे ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का दरवाजा खटखटाया

दिल्ली में प्रियंक कानूनगो से की मुलाकात

बीड़: मस्साजोग गांव के सरपंच संतोष देशमुख की निर्मम हत्या को 25 दिन बीत चुके हैं, लेकिन अब तक मुख्य आरोपी को गिरफ्तार नहीं किया गया है। इस बीच, संतोष देशमुख की हत्या और उनके शव के साथ की गई अमानवीयता को शर्मनाक बताते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग से स्वतंत्र जांच की मांग की गई है। इस संबंध में सांसद बजरंग सोनवणे ने आयोग के सदस्य प्रियंक कानूनगो से मुलाकात कर उन्हें ज्ञापन सौंपा है।

पुलिस की लापरवाही से गई जान?

9 दिसंबर को जब संतोष देशमुख के अपहरण की खबर सामने आई, तब सबसे पहले सांसद बजरंग सोनवणे ने पुलिस अधीक्षक अविनाश बारगले से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने फोन रिसीव करने से इनकार कर दिया। इसके अलावा, केज पुलिस ने भी इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया। इस दौरान संतोष देशमुख को मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित कर

उनकी हत्या कर दी गई। यदि पुलिस समय पर कार्रवाई करती, तो शायद संतोष देशमुख की जान बचाई जा सकती थी। लेकिन उनकी नृशंस हत्या कर दी गई।

अमानवीयता की हदें पार

संतोष देशमुख को इतनी बेरहमी से पीटा गया कि उनके शरीर पर कोई जगह भी सलामत नहीं थी। उनके शरीर को जलाया गया। उनके शव को भी अपमानित किया गया। इस क्रूर घटना ने पूरे महाराष्ट्र को झकझोर कर रख दिया है। 9 दिसंबर को हुई इस हत्या के मामले में अब तक चार आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है, लेकिन तीन अभी भी फरार हैं।

आज 3 जनवरी को दिल्ली में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्य प्रियंक कानूनगो से मुलाकात कर सांसद बजरंग सोनवणे ने इस मामले की स्वतंत्र जांच के लिए विशेष समिति गठित करने की मांग की। पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने के लिए सोनवणे का संघर्ष सांसद बजरंग सोनवणे पहले दिन से इस हत्याकांड में न्याय की लड़ाई लड़ रहे हैं। उन्होंने संसद में इस मुद्दे को उठाया।संसद के बाहर भी विरोध दर्ज कराया।पुलिस अधिकारियों से लगातार संपर्क बनाए रखा।कानूनी तरीके से जांच को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। अब देखना यह है कि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग इस मांग पर क्या निर्णय लेता है और फरार आरोपियों की गिरफ्तारी कब होती है।

मास्टर माइंड किड्स अबेकस क्लासेस की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में शानदार सफलता

बीड़ : शहर के ज़मज़म कॉलोनी में स्थित मास्टर माइंड किड्स अबेकस क्लासेस के छात्रों ने इस वर्ष पुणे में आयोजित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में बेहतरीन सफलता प्राप्त कर, हर साल की तरह इस साल भी अपनी जीत का सिलसिला जारी रखा है। इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में ज़मज़म कॉलोनी में हाल ही में सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें विजयी छात्रों के साथ-साथ क्लासेस के शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बीड़ पंचायत समिति के बीडीओ अनिरुद्ध सानप ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में एआईएमआईएम पार्टी के बीड़ जिला अध्यक्ष एडवोकेट शेख शफीक भाऊ, 'सा. द. स्कूल एक्सप्रेस' के संपादक शेख एजाज़ सर, उर्दू शिक्षक संघ के संस्थापक अध्यक्ष शाहिद कादरी सर, अज़ीज़ राजा सर और ताजुद्दीन सर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत पवित्र कुरान के पाठ से हुई, जिसे सिद्दीकी उनाइस मोईज़ ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का प्रस्तावना भाषण क्लासेस की संचालिका मोमिन मुस्कान सलमान ने दिया। इस कार्यक्रम में राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। पुरस्कार प्राप्त करने वाले छात्रों में शामिल हैं: माज़ अब्दुल खुद्दूस, शैजान खान शहेबाज खान, सिद्दीकी मुहम्मद उनाइस (पाथरी, जिला परभणी) – जिन्होंने अबेकस का ऑनलाइन प्रशिक्षण लेकर तीसरी बार पुरस्कार प्राप्त कियाशेख जुनैरा रफीकुर्रहमान, शेख रक्षंदा अखील इन सभी विद्यार्थियों को ट्रॉफी और सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा, शेख माज़ खाजा पाशा और मोमिन इज़हार मजहर ने दो साल की डिग्री पूरी कर पुणे में आयोजित प्रतियोगिता में विशेष पुरस्कार हासिल किया। ए कैटेगरी में शेख मुहम्मद जोहानुर्रहमान प्रथम स्थान पर रहे। शेख मारिया द्वितीय स्थान पर रहीं। इन सभी छात्रों को भी ट्रॉफी और सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। मास्टर माइंड किड्स अबेकस क्लासेस के शिक्षकों को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया: जुबैरी फिरदोस फयाजुद्दीन मैडम, शेख आयशा मैडम, जुबैरी मुजम्मिल सर उन्हें भी मान्यवरों के हाथों ट्रॉफी और सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मादळमोही जिला परिषद स्कूल में शिक्षण सामग्री का वितरण

गेवराई : तालुका के मादळमोही स्थित जिला परिषद उर्दू स्कूल में सामाजिक कार्यकर्ता शेख अलीम ने अपने जन्मदिन के अवसर पर स्कूल के सभी विद्यार्थियों को कॉपी और पेन वितरित कर अपना जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष अय्यूब पठान, प्रधानाध्यापक अज़ीम सर और सभी शिक्षकों ने शेख अलीम का शॉल और पुष्पगुच्छ देकर अभिनंदन किया और उन्हें शुभकामनाएँ दीं।

प्रधानाध्यापक अज़ीम सर ने कहा कि शेख अलीम द्वारा अपने जन्मदिन पर विद्यार्थियों को कॉपी-पेन उपहार में देने से सभी छात्र बेहद खुश हुए और उनके इस सराहनीय कार्य की सभी ने प्रशंसा की।

दैनिक भारत की तामीर अखबार के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक काजी मखदूम शफीउद्दीन ने आरएम प्रिंटरर्स, बार्शी रोड, बीड 431122 महाराष्ट्र में मुद्रित कर के दैनिक तामीर, नगर परिषद परिसर, बशीर गंज, बीड, महाराष्ट्र कार्यालय से प्रकाशित किया है। मोबाइल : 9270574444 ईमेल : hinditameer@gmail.com वेबसाइट : www.dailytameer.com

daily Bharat ki tameer newspaper owner printer publisher editor Quazi makhdoom shafiuddin has printed at RM printers barshi road beed 431122 Maharashtra at published at office daily tameer nagar parishad complex Bashir gunj beed Maharashtra. Mobile : 9270574444 Email : hinditameer@gmail.com Website : www.dailytameer.com